ISSN: 2583-1453 SANCHAR SAROKAR January-March, 2022
www.sancharsarokar.in संचार सरोकार Vol.1, Issue 4
Page Nos. 27-39
Quarterly Peer Reviewed Bilingual Multidisciplinary Research e-Journal

हरियाणवी वेब सीरीज का सामाजिक - सांस्कृतिक अध्ययन (स्टेज एप पर हरियाणवी वेब सीरीज के विशेष संदर्भ में)

डॉ बिजेंद्र कुमार*

*एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ भीमराव अंबेडकर कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)

सारांश :

सिनेमा के माध्यम से समाज - संस्कृति के महत्वपूर्ण मुद्दों पर विमर्श होता रहा है। डिजिटल माध्यम और ओटीटी प्लेटफॉर्म के आने के बाद वेब सीरीज ने इस विमर्श को आगे बढ़ाने का काम किया है। कोरोना काल में अनेक उद्योगों के सामने नए अवसर उभरे। मनोरंजन के माध्यम के रूप में ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म का विस्तार भी इसी कड़ी में से एक उद्योग है। कोविड काल, लॉकडाउन और प्रतिबंधित जीवन शैली के समय में हिन्दी, अंग्रेजी के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं में बनी वेब सीरीज अत्यंत लोकप्रिय हुईं। हरियाणवी बोली में स्टेज पर आरंभ हुई अनेक वेब सीरीज अपने समय के ज्वलंत सामाजिक -सांस्कृतिक मुद्दों को नए सिरे से बहस के केंद्र में लाती है। हरियाणा के पारंपरिक समाज और संस्कृति वाले परिवेश में अन्धविश्वास, रूढ़ियों, मान्यताओं और परंपरा को वेब सीरीज न केवल नए संदर्भ में देखती हैं ,बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ को भी सिरे से परिभाषित करती हैं। आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप संस्कृति में आए बदलाव भी इन वेब सीरीज में हैं तो बदलते सामाजिक परिवेश के चित्र भी हैं ।नशा और शराब जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध उठाए जाने वाले मुद्दे हों या बोली, खानपान, रीति -रिवाज आदि ये सब इन वेब सीरीज में देख सकते हैं। युवा वर्ग इन वेब सीरीज के माध्यम से हरियाणवी पारंपरिक समाज -संस्कृति के विविध पक्षों से रूबरू हो रहा है। कैंप बनवास, मेरे यार की शादी है, सेफ हाउस, ग्रुप डी, किराएदार, प्रेमनगर, गौरव की स्वीटी आदि वेब सीरीज हरियाणवी युवाओं के रोजगार, परिवार में समाज

में उसकी स्थिति, प्रेम, महत्वाकांक्षा, संघर्ष, जुझारुपन, जीवट और जीवन के विभिन्न रूपों की प्रस्तुति करती हैं जिसमें युवा परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य स्थापित करता दिखाई देता है। अधिकतर वेब सीरीज हरियाणा जैसे पारंपरिक समाज में संतुलनवादी दृष्टिकोण अपनाती सी दिखती है। उन में क्रांति की बजाय यथास्थिति पर तार्किक तरीके से परिवर्तन के प्रयास किए गए हैं।

संकेत शब्द : समाज, संस्कृति, हरियाणा, परंपरा, आधुनिकता, वेबसीरीज, वैश्वीकरण, युवा पीढ़ी, परिवर्तन, अंधविश्वास, रूढ़ियाँ, तार्किकता, पहचान, गरिमा, अधिकार, स्वतंत्रता, निजता ।

प्रस्तावना:

समाज और संस्कृति परस्पर संबंध है। प्रत्येक समाज की एक संस्कृति होती है और हर एक संस्कृति समाज की ही निर्मिती होती है। संस्कृति समाज विशेष में ही परिवर्तित, पल्लवित और पुष्पित होकर दूसरे समाज- संस्कृति के संपर्क में आकर एक- दूसरे को प्रभावित करती हैं। विभिन्न माध्यम और कलाएं संस्कृति की वाहक होती हैं। सिनेमा भी ऐसी ही एक कला है जो समाज और संस्कृति के विविध रूपों को न केवल विमर्श और बहस के केंद्र में लाती है बल्कि उनके परिवर्तन का भी उपकरण बनती है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्टेज ऐप की हरियाणवी वेब सीरीज में समाज और संस्कृति के विविध रूपों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। हरियाणवी समाज और संस्कृति के अनेक ज्वलंत मुद्दे हैं जो इन वेब सीरीज में उठाए गए हैं। हरियाणवी समाज की संस्कृति, मानसिकता, परंपरा और मान्यताएं इन वेब सीरीज के केंद्र में हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में स्टेट एप की वेब विभिन्न वेब सीरीज को ध्यान में रखकर हरियाणवी समाज और संस्कृति का अध्ययन किया जाएगा।

संस्कृति का संबंध प्राय संस्कार से जोड़कर देखा जाता है। किसी भी समाज में संस्कारों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इन संस्कारों से ही समाज का व्यवहार और संचालन होता है। बाबू गुलाब राय संस्कार को दो तरह से परिभाषित करते हैं। पहला व्यक्ति के संस्कार दूसरा, जातीय संस्कार। जाति संस्कारों को उन्होंने संस्कृति माना है। इसका मूल आधार मानवता है। संस्कृति का एक ही मूल उद्देश्य है कि संस्कृति देश विशेष विशेष की उपज होती है उसका संबंध है देश के भौतिक वातावरण और उसके बाद पोषित एवं परिवर्तित विचारों से होता है (बाबू गुलाब राय, 2018)1

समाज गतिशील है ,जिसमें राजनीतिक ,सामाजिक और आर्थिक कारणों से परिवर्तन घटित होते हैं। समाज की संस्कृति भी इससे अछूती नहीं रहती है। वासुदेव शरण अग्रवाल संस्कृति को मनुष्य के भूत, वर्तमान और भविष्य का सर्वांगपूर्ण प्रकार मानते

हैं। उनका मानना है कि हमारे जीवन का ढंग हमारी संस्कृति है। संस्कृति हवा में नहीं रहती, उसका मूर्तिमान रूप होता है। जीवन के नानाविध रूपों का समुदाय ही संस्कृति है (वासुदेव शरण अग्रवाल, 2020)2

धर्म, दर्शन, कला और साहित्य आदि संस्कृति के ही विविध रूप है। इसमें किसी समाज का प्राण तत्व बसता है। डा राजेंद्र प्रसाद इस प्राण तत्व को सामूहिक चेतना के नाम से अभिहित करते हैं। उनके अनुसार संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण तत्व है इसी नैतिक चेतना के सूत्र हमारे नगर, ग्राम, प्रदेश और समुदाय में हैं। हमारे विभिन्न वर्ग और जाति आपस में बंधी हुई हैं, उनमें यह एकता है (प्रसाद, राजेंद्र, 2012)3

भारत में विदेशी आक्रमण और ब्रिटिश औपनिवेशिक व्यवस्था के लंबे प्रभाव के कारण विभिन्न क्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तन हुए। भारतीय समाज और संस्कृति इन परिवर्तनों से अछूती नहीं रही। औद्योगिक क्रांति और नई राजनीतिक, शैक्षिक, पुलिस ,प्रशासन और न्यायिक व्यवस्था ने भारतीय समाज और संस्कृति को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के दौर में नई अर्थनीति और तकनीकी क्रांति के परिणाम स्वरूप सूचना संचार के अनेक माध्यम सामने आए हैं जिन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति को गहरे तक प्रभावित किया है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया और प्रभाव से राजधानी के नजदीक का हरियाणा भी अछूता नहीं रहा है।

नई अर्थनीति से बने बाजारवाद ने उपभोक्तावादी संस्कृति का निर्माण किया है। साहित्य से लेकर सिनेमा तक सारी कलाएं इस समय में नए सिरे से परिभाषित और परिवर्तित हो रही है। पश्चिम जीवन-शैली और संस्कृति नई वैश्विक अर्थव्यवस्था में बाजार से संचालित होने लगी है। विकसित देशों की संस्कृति विकासशील देशों में बाजार और संचार के साधनों के माध्यम से प्रवाहित हो रही है। पश्चिमी जीवनशैली पिछड़े देशों में एक समरूपी संस्कृति का निर्माण कर रही है। डॉ गिरीश्वर मिश्र इसे संस्कृति पर एक खतरे के रूप में देखते हैं ।उनके अनुसार आज वैश्विकता की जोरदार मुहीम छिड़ी है जो सबको एक ढांचे में बांधकर रखने को उद्धत है। भौतिकता और बाजार की बढ़ती ताकत ने उपभोग को ही विकास और समृद्धि का पैमाना बना डाला है। इस के आवरण में हमारे जीवन की विविधता पर खतरा मंडरा रहा है। एक ही तरह की वस्तुएं प्रचलन में आ रही है (मिश्रा गिरिश्व, 2020)4

वैश्वीकरण के विचारों और संस्कृति का यह वर्चस्व भारत जैसे परंपरागत मूल्यों, मान्यताओं और

विश्वास से संचालित समाज और संस्कृति के लिए एक चुनौती है। हरियाणा जैसे राज्य भी आज एक संक्रमण के दौर से गुजर रहे हैं, जहां एक तरफ पारंपरिक मान्यता, मूल्य, रीति-रिवाज, अंधविश्वास और रूढ़ियां हैं तो दूसरी तरफ शिक्षा, नागरिक अधिकार समानता, मानवीय गरिमा, पहचान और संवैधानिक अधिकारों को लेकर जागरूकता आ रही है। हरियाणा सिनेमा और वेबसीरीज में यह बदलता हुआ परिवेश परिलक्षित होता है, यद्यपि हरियाणा में सिनेमा इंडस्ट्री बहुत ज्यादा विकसित नहीं है, लेकिन पिछले दो-तीन वर्षों में जो वेब सीरीज आई है उनमें हरियाणवी समाज-संस्कृति के ज्वलंत मुद्दों को उठाया गया हैं। स्टेज ऐप की वेब सीरीज में हरियाणा की समाज - संस्कृति के विविध रूपों का अध्ययन प्रस्तुत शोध पत्र का विषय है।

शोध प्रविधि:

प्रस्तुत शोध पत्र में हरियाणवी वेब सीरीज में सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श (स्टेज ऐप पर हरियाणवी वेब सीरीज के संदर्भ में) पर शोध हेतु ऐतिहासिक एवं सामग्री विश्लेषण शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है। हरियाणवी सिनेमा के ऐतिहासिक परिदृश्य के विवेचन-विश्लेषण को केंद्र में रखकर ऐतिहासिक पृष्ठभूमि सहित उनकी गुणवत्ता और सार्थकता का विवेचन किया गया है। वेब सीरीज की सामग्री को समझने और विश्लेषण का प्रयास किया गया जिसमें विभिन्न विषय, मुद्दों, समस्याओं और चुनौतियों को केंद्र में रखकर विवेचन किया गया है।

शोध उद्देश्य :

1. हरियाणवी वेबसीरिज में निर्मित समाज का अध्ययन करना।
2. हरियाणवी वेबसीरिज की संस्कृति के परिवर्तित रूपों का विवेचन।
3. हरियानवी वेबसीरीज में परिवर्तित समाज और संस्कृति की स्थिति का अध्ययन।

हरियाणवी सिनेमा की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि:

एक परंपरागत सामाजिक व्यवस्था होने तथा औद्योगिक व तकनीकी रूप से संपन्न में ना होने के कारण हरियाणा में लंबे समय तक सिनेमा के प्रति अपेक्षा का भाव रहा। हरियाणा में मनोरंजन के साधन के रूप में लोकगीत, सांग, रागिनी और भजन ही अधिक लोकप्रिय रहे। आजादी के बाद भी लंबे समय तक फिल्मों के निर्माण की गति इस राज्य में बहुत धीमी होने के कारण लोगों का फिल्मों के प्रति अच्छा नजरिया ना होना भी था। हरियाणा समाज में बीसवीं सदी के उत्तरार्ध तक फिल्मों को लेकर सकारात्मक सोच का अभाव था। हरियाणा में पहली बार आजादी के कई वर्ष बीत जाने पर 1968 में अपनी बोली में फिल्म धरती

रिलीज हुई। इस फिल्म के बाद भी हरियाणवी फिल्मों की स्थिति नहीं बदली। दिसंबर, 2017 में जनसत्ता में प्रकाशित हरियाणवी सिनेमा पर प्रकाशित एक रिपोर्ट में कहा गया कि बॉलीवुड में हरियाणवी पृष्ठभूमि पर लगातार फिल्म निर्माण हो रहा है। लंबे समय से बॉलीवुड सिनेमा में हरियाणवी कलाकारों की धाक रही है, इसके बावजूद 51 सालों में हरियाणवी सिनेमा अपने पांव पर खड़ा नहीं हो सका है। हरियाणवी सिनेमा की बात करें तो 51 सालों में सिर्फ 43 फिल्म आ पाई हैं इनमें आधा दर्जन फिल्में ही ऐसी है जो दर्शकों के दिलो-दिमाग पर अपनी अमिट छाप छोड़ पाई हैं। (जनसता, 01/12/2017)5

1984 में चंद्रावल रिलीज होने के बाद हरियाणवी फिल्मों के निर्माण की दिशा का कार्य आगे बढ़ा। बॉलीवुड में हरियाणा के अनेक निर्माता -निर्देशक, अभिनेता-अभिनेत्री वर्षों से सक्रिय रहे लेकिन चंद्रावल की सफलता ने हरियाणवी में फिल्म बनाने के लिए बाजारों नई संभावनाओं के दरवाजे खोले। वेबसीरीज निर्देशक विश्वास चौहान कहते हैं कि हरियाणवी फिल्म इंडस्ट्री अभी विकसित और व्यवस्थित होने की राह पर है। अभी सब अलग - अलग प्रयास कर रहे हैं। एक दर्शक वर्ग भी बन रहा है। अलग-अलग कहानियाँ या रही हैं। पटकथा के स्तर पर परिपक्वता नहीं नहीं है। पहले फिल्म विधा पर दर्शकों को विश्वास करना होगा। कंटेन्ट को दर्शकों से जोड़ने की चुनौती है। हरियाणा के फिल्म इंडस्ट्री में अब पंजाब की कंपनियां रूचि ले रही हैं। (विश्वास चौहान, साक्षात्कार 07/03/2022)6

सन 2000 में अश्विनी चौधरी ने लाड़ो बनाकर एक नई राह प्रशस्ति की। इसके बाद हरियाणा की नई पीढ़ी ने हरियाणवी फिल्मों में रुचि दिखानी आरंभ की। 2000 के बाद में इन्टरनेट और सोशल नेटवर्किंग साइट के रूप में फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और विभिन्न डिजीटल चैनलों ने गीत - संगीत, फिल्मों और मनोरंजन के नए दरवाजे खोल दिए। ओटीटी प्लेटफॉर्म ने तो क्षेत्रीय बोलियों के सिनेमा में वेबसीरीज का नया बाजार बनाया। हरियाणा भी अपवाद नहीं था। स्थानीय बोलियों पंजाबी, भोजपुरी, राजस्थानी, हरियाणवी बांगला, मराठी, तमिल, तेलुगु, कन्नड़ आदि में वेबसीरिज का बाजार बनने लगा। स्थानीय मुद्दों पर गीत डॉक्यूमेंट्री, फिल्में और वेब सीरीज की मांग होने लगी। स्मार्टफोन और डाटा सेवाओं के सस्ते होने तथा सोशल मीडिया में विभिन्न तकनीकी सॉफ्टवेयर की उपलब्धता तथा एप्लीकेशन के विविध रूपों ने उपभोक्ता को सामग्री निर्माण के लिए प्रेरित किया। तकनीक फ्रेंडली युवा पीढ़ी ने इस अवसर का लाभ उठाया और डिजिटल मीडिया के विभिन्न रूपों के लिए सामग्री निर्माण का काम

आरंभ कर दिया। हरियाणवी युवा ने भी इस अवसर को हाथों हाथ लिया। आज स्टेज जैसे एप पर हरियाणवी युवा गीत, धारावाहिक, चुटकुले, रागिनी, नाटक, कविताएं, किस्से-कहानियां और वेब सीरीज आदि का निर्माण कर रहा है। स्टेज एप पर पहली बार हरियाणवी बोली में कलाकार और कंटेंट अपनी जगह बना रहा है। हरियाणवी बोली में वेब सीरीज में सामाजिक-सांस्कृतिक विमर्श प्रस्तुत शोध पत्र का विषय है। इसमें हरियाणवी वेब सीरीज में विभिन्न सामाजिक समस्याओं को सामाजिक परिवेश, मूल्य, युवा आकांक्षा, परंपरा और आधुनिकता के साथ परिवार और व्यक्ति की टकराहट के साथ विभिन्न वर्गों की स्थिति एवं संघर्ष, महिलाओं की स्थिति तथा जातिगत व राजनीतिक परिवेश आदि के संदर्भ में अध्ययन किया जाएगा।

साहित्य सामग्री विश्लेषण:

20 अक्तूबर 2019 को पहले हरियाणवी बोली सामग्री प्रस्तुत करने वाले स्टेज एप की शुरुआत हुई। मनोरंजन के क्षेत्र में हरियाणवी बोली डिजिटल और ऑनलाइन की दुनिया में प्रवेश थोड़ी देर से हुआ लेकिन इसकी गति संतोषजनक है। हरियाणवी फिल्मों के निर्देशक अपने कलाकारों के लिए स्टेज एप ने एक मंच तैयार किया है । पाले बंदिशों में रहकर काम करना पड़ता था। स्टेज एप के माध्यम से काम करने का अवसर मिला है (सत्य खबर न्यूज़ चैनल, साक्षात्कार)7

आज स्टेज ऐप पर शॉर्ट फिल्म, फिल्में, सांग, रागिनी, कॉमेडी, कविताएं, किस्से- कहानियां और वेब सीरीज आदि मनोरंजक सामग्री हरियाणवी बोली में उपलब्ध है। नेटफ्लिक्स और जी जैसे ओटीटी प्लेटफार्म पर भी हरियाणवी कंटेंट की मांग बढ़ रही है। स्टेज एप पूर्णतया हरियाणवी बोली आधारित सामग्री ऐप है। इस ऐप के आरम्भ करने के बारे में एक साक्षात्कार में बताया गया कि 2019 में स्टेज एप का आइडिया आया और इस पर कार्य करना आरंभ किया। छह महीने हरियाणा भर में घूम-घूम कर कलाकारों की खोज की और सामग्री की मांग की पहचान की। आज नए सामग्री निर्माता और कलाकार जुड़ रहे हैं, जो हमारे साथ काम करना चाहते हैं। हरियाणवी लोग अपना टैलेंट दिखाने के लिए एक मंच का इंतजार कर रहे थे। हमने इस कमी को पूरा किया, दूसरे जनता के अनुसार हरियाणवी संस्कृति को बचाने का जिम्मा हम पर है। जनता ने कोई भी ऐसा कंटेंट बनाने से मना कर दिया जो परिवार के साथ बैठकर ना देखा जा सके (सत्य खबर टीवी चैनल ,साक्षात्कार)8

अभी तक स्टेज ऐप को 15 लाख लोग डाउनलोड कर चुके हैं। इकोनोमिक्स टाइम्स की एक रिपोर्ट में इनफ्लेक्शन प्वाइंट के सह संस्थापक मितेश शाह कहते हैं कि हमने स्टेज ऐप की अवधारणा को अद्वितीय पाया क्योंकि इसका उद्देश्य देश की विविधता को संरक्षित करना और भारत के दिल

तक पहुंचना है जो ओटीटी श्रेणी में मौजूदा बाजार के नेताओं द्वारा पूरी तरह उपेक्षित बाजार है (द इकोनोमिक्स टाइम्स, 11/03/2021)9

स्टेज ऐप की शुरुआत एक निशुल्क डाउनलोड ऐप के रूप में हुई। बाद में चलकर इसका सब्सक्रिप्शन मॉडल भी आरंभ किया गया। अभी तक 75 हजार उपभोक्ता इस एप की सदस्यता ले चुके हैं। इस एप पर लगभग 279 वीडियो उपलब्ध है। कार्यक्रम निर्माण, गुणवत्ता और विविधता की दृष्टि से स्टेज पर उपलब्ध सामग्री अभी अपने प्रारंभिक दौर में है। कहानी, स्क्रीनप्ले, कैमरा डायलॉग, शाट विभाजन व तकनीक आदि पक्षों में भी परिपक्वता आ रही है। वर्तमान में 30 मिलियन हरियाणवी बोलने वाले और 18 मिलियन स्मार्टफोन वाले हरियाणवी बोली के बाजार पर फिल्म उद्योग की नजर है। वेब सीरीज एक चर्चित मनोरंजन सामग्री के रूप में हरियाणवी बोली भी अपनी जगह बनाने में सफल हो रही है। आज स्टेज एप पर मेरे यार की शादी है सीजन 1 और सीजन 2, कैंप बनवास, कॉलेज गर्ल, सेफहाउस, भारती, ग्रुप डी, प्रेम नगर, गौरव की स्वीटी आदि प्रमुख वेबसीरिज हैं। इन वेब सीरीज का निर्माण पिछले 2 वर्षों में ही हुआ है। हरियाणवी वेब सीरीज मेरे यार की शादी है के निर्देशक विश्वास चौहान के अनुसार कोविड काल को हरियाणवी फिल्म से जुड़े लोगों ने एक अवसर के रूप में लेकर विभिन्न सामाजिक-सांस्कृतिक मुद्दों पर वेब सीरीज बनानी शुरू की। (साक्षात्कार विश्वास चौहान, 07/03/2022)10

स्टेज एप की हरियाणवी वेब सीरीज अपने समाज और संस्कृति के ज्वलंत सवालों से रूबरू कराती हैं। परंपरा और आधुनिकता का संक्रमण और संघर्ष इनमें मौजूद है। इन वेब सीरीज में सामाजिक मुद्दे और सांस्कृतिक मूल्यों के संघर्ष और उनकी तकरार देखी जा सकती है जिनमें एक ओर तो पुरानी सामाजिक पारिवारिक व्यवस्था, मूल्य ,परंपरा, रूढ़ियां और अंधविश्वास है तो दूसरी और आधुनिकता बोध से प्राप्त लोकतंत्र और अधिकार भाव, व्यक्तिगत पहचान, समानता और स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता जैसे वैश्विक मूल्य है। पहली हरियाणवी सीरीज से ही परंपरा और आधुनिकता के द्वंद को देखा जा सकता सकता है। विश्वास चौहान की वेब सीरीज मेरे यार की शादी है सीजन वन बदलते हुए हरियाणवी पारंपरिक परिवेश की सोच, मूल्यों, मान्यताओं और विचारों की टकराहट को प्रस्तुत करती है। एक ओर इसमें सामाजिक रूढ़ियों, विडंबना और अंधविश्वासों पर सवाल उठाए गए हैं तो दूसरी ओर पारंपरिक सांस्कृतिक परिवेश को बनाए रखने की जद्दोजहद भी है। सरकारी रोजगार के प्रति यथार्थवादी सामाजिक दृष्टिकोण को भी ये वेब सीरीज प्रस्तुत करने में

सफल रही है। यह वेबसीरिज भारतीय समाज में सरकारी नौकरी के प्रति आकर्षण को दर्शाती है जिसे पद और प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जाता है और जो विशिष्ट होने की भावना पैदा कर देती है। मेरे यार की शादी है में सरकारी नौकर और बेरोजगारी झेल रहे दो दोस्तों के बीच में स्टेटस आ जाता है। सरकारी नौकरी दोनों के बीच दरार का कारण बन जाती है। सरकारी नौकर और बेरोजगार दोस्त के साथ यह वेबसीरिज पारिवारिक संबंधों और उसकी जकड़न को भी प्रस्तुत करने में सक्षम रही है। हरियाणवी जैसे रूढ़िवादी समाज में बाप -बेटे के बीच के संबंधों के तनाव को भी बड़ी खूबसूरती से वेबसीरीज में उकेरा गया है। सरकारी नौकरी को लेकर हरियाणवी समाज की सोच बहुत विशिष्ट है। यह नौकरी भले ही छोटी होती हो लेकिन समाज में इसका रुतवा परिवार से लेकर शादी-विवाह, रिश्ते -नातों आदि सबको प्रभावित करने की क्षमता रखता है ।

मेरे यार की शादी है सीजन वन में पीली चिट्ठी, बटन, तंबू का तिरपाल, अपशुगन, बारात नामक पाँच एपिसोड हैं। इस वेबसीरीज में प्रेम विवाह में जाति बंधन के शिकार अविवाहित चरित्र के रूप में कमले की पीड़ा को उभारने में निर्देशक सफल रहे हैं। शादी के संस्कारों में हल्दी लगाना, गीत- नृत्य आदि भी जीवंत बन पड़े हैं। नौकरी ना मिले या बेरोजगार युवाओं की शादी में रुकावट हरियाणा ही नहीं भारतीय समाज की भी एक ज्वलंत समस्या है। मेरे यार की शादी है वेबसीरीज इस समस्या को बखूबी सामने लाती है। इस वेब सीरीज के सीजन 2 में प्रेम धागा, सादगी ,इम्तिहान ललकार दे और परिणाम के नाम से पाँच एपिसोड है जिसमें ग्राम प्रधान की गांव में फैक्ट्री लगाने और सरकारी अमले की रस्साकशी, विशु का अपनी मर्जी के खिलाफ विवाह के प्रयासों की खिलाफत हरियाणवी युवा के बंधनों को तोड़ने के प्रयासों की झलक दिखाता है। हरियाणा का युवा अब औरों के निर्णय ओढ़ने की बजाए अपने निर्णय लेने में यकीन करता है। इस वेब सीरीज में किसान और उनकी जमीन से जुड़ी हुई समस्याओं को भी उठाया गया है। गांव का सरपंच खेती की जमीन पर फैक्ट्री लगाना चाहता है लेकिन विशु, ग्राम पंचायत सचिव और कमले मिलकर इसका विरोध करते हैं। ये तीनों बाकी सब गांव वालों को भी अपने साथ करने का प्रयास करते हैं और अंततः कामयाब हो पाते हैं। गांव वालों को समझाते हैं कि 1 लीटर कोल्ड ड्रिंक बनाने में तीन लीटर पानी खर्चा होता है, कहां से आएगा? आखिरकार सब गांव वाले मिलकर इसका विरोध करते हैं और सरपंच की चाल नाकाम होती है। हरिभूमि पत्र की एक रिपोर्ट के अनुसार इस वेबसीरिज के सीजन 2 में एक नौजवान की कहानी को दिखाया है। जो नौकरी, जमीन, राजनीति और परिवार की जद्दोजहद के बीच फंस कर अपने सम्मान की लड़ाई लड़ता है। यह वेबसीरिज आज के हर उस नौजवान

की कहानी से प्रेरित है जो अपनी जिंदगी में मूलभूत सुविधाओं के लिए संघर्ष करता है। हरियाणा प्रति व्यक्ति आय बेहतर होने के बावजूद बेरोजगारी दर में डबल डिजिट है। (हरिभूमि,19/08,2021)11

गौरव की स्वीटी वेबसीरीज को पहले दहिया वर्सेस मालिक टाइटल दिया गया था जिस पर काफी विवाद हुआ था। यह दो भिन्न गौत्र के प्रेमी प्रेमिकाओं की कहानी है जो दो परिवारों की पारिवारिक रंजिश के बीच पनपती है। इसमे हीरोइन पारंपरिक हरियाणवी लड़की की छवि के विपरीत एक आत्मनिर्भर और अपना व्यवसाय चलाने वाली बिजनेस वूमेन है। अंतत अनेक कठिनाइयों और संघर्ष के बाद प्रेमी-प्रेमिका पारिवारिक रंजिश को समाप्त करने में कामयाब हो जाते हैं जो कि रूढ़ियों में जकड़े समाज में एक सकारात्मक पहल है। इस फिल्म की अभिनेत्री ने एक साक्षात्कार में कहा कि फिल्म में किसी भी गौत्र व खाप के माँ सम्मान को ठेस नहीं पँहुचाई गई है। यह एक मनोरंजन फिल्म है। (दैनिक जागरण 22/10/2022)12

सेफ हाउस घर प्रेम में घर से भाग जाने वाले युगल की कहानियाँ हैं जिन्हें सरकार सुरक्षा प्रदान करने के नाम पर एक घर में कैद कर देती है जहाँ नाम मात्र की सुविधाएं हैं। हरियाणा में शादी के लिए अपनी एक परंपरा है जिसमें गौत्र और खाप का विशेष स्थान है। गौत्र और खाप की परंपराओं के उल्लंघन होने और अपनी मर्जी से शादी के कारण परिवार, कुल, और गाँव का विरोध भी झेलना पड़ता है। कभी कभी हॉनर किलिंग की घटनाएं भी शर्मशार कर देती हैं। सेफ हाउस में अनेक जोड़े इन पीड़ाओं और सामाजिक दंश को झेल रहे हैं। इस वेबसीरिज के निर्देशक रमेश चहल का मानना है कि फिल्म में इस बात को प्रमुखता से उठाया गया है कि एक ही गाँव व गौत्र के बीच शादियाँ सामाजिक तौर पर अमान्य हैं, कानून ऐसी शादियों को मान्यता देता है और जोड़ों की सुरक्षा के लिए सेफ हाउस में रखने के फरमान जारे होते हैं जहां सुरक्षा तो दूर पूरी सुविधाएं भी नहीं हैं (19/08/2021, www.jeevanadhar.co)13

दूसरी ओर विनय सिंघल के अनुसार सेफ हाउस में एक पॉजिटिव और अलग प्रकार के बेहतरीन कंटेन्ट के साथ खाप पंचायत के रोल को दिखाया जाएगा (हरिभूमि 19/08/2021)14

सेफ हाउस नौ ऐसे जोड़ों की कहानी है जो वयस्क हैं और सामाजिक रीति रिवाजों के विरुद्ध प्रेम संबंध बनाते हैं और शादी करने लिए पुलिस और अदालत की शरण में जाते हैं। कानून इन्हें सेफ हाउस के रूप में सुरक्षित स्थान उपलब्ध कराता है, जहां से बाहर निकालने पर इनकी जान पर लगातार खतरा मंडराता राहत है। सेफ हाउस के युवा प्रेमी यगलों में रवीना बिशनोई, रमेश चहल, बिन्द्रर दानोडा और नरेंद्र धूलिया ने इस डर की सजीव अभिव्यक्ति की है।

तीन एपिसोड में बनी भारती लैंगिक असमानता, बलात्कार और हत्या के जघन्य तस्वीर पेश करती है। ग्रामीण जीवन में स्त्री को भोग्या और उसके जीवन की कोई कीमत न समझने वाली नराधम सोच को भारती उजागर करती है। कमजोर और गरीब की बेटी बलात्कार का आसानी से शिकार बना ली जाती है। न्याय के लिए पुलिस, प्रशासन की बेरुखी, भ्रष्टाचार और उनकी ज़्यादतियाँ जगजाहिर हैं। भारती वेबसीरिज में ताकतवर आरोपी, भ्रष्टाचारी पुलिस और न्यायिक विवशता अंतत आरोपी की हत्या की परिणति में परिवर्तित होती है। ताकत और पैसे दम पर कैसे पुलिस और कानून को बंधक बना लिया जाता है, भारती वेबसीरिज इसका उदाहरण है। हरियाणा लिंग अनुपात के मामले में आमतौर पर चर्चा में रहता है। लैंगिक समानता और स्वतंत्रता यहाँ हमेशा एक चुनौती रही है। वेबसीरिज निर्माता विश्वास चौहान कहते हैं कि वेबसीरिज के माध्यम से सामाजिक अंधविश्वास को तोड़ने का है अभी समाज सुधार की जरूरत है समाज व्यवस्था में गलत चीजों के खिलाफ आवाज उठाने की जरूरत है पुरानी चीजों को ने संदर्भ में देखने की जरूरत है (साक्षात्कार विश्वास चौहान, 07/03/2022)15

चौधर भी परंपरा को ढोते एक बुजुर्ग की कहानी है जो एक शराबी बेटे की करतूतों, अपराधों और शराब की लत पर बर्बाद की गई लाखों रुपये बर्बादी को चुकाने के लिए सिर्फ खानदान की इज्जत और नंबरदारी के रुतबे और झूठी शान को बनाए रखने हेतु लाखों का कर्ज लेता है। चौधर के बारे में एक संवाद इसका प्रमाण है कि "या चौधर ऐसी चीज है आदमी न अपने असूलों प अपनी मान मर्यादा अर अपने वचन पर रहना पड़े सै चाए अपणी जान भी क्यूँ नया देनी पड़े। (चौधर वेबसीरीज)16

इस वेबसीरिज में सरपंच पुरानी सोच का प्रतिनिधि किरदार है । लड़कियों की पढ़ाई का विरोधी और उनकी पढ़ाई की वकालत को भी यह वेबसीरीज दर्शाती है। स्कूल -कॉलेज में लड़कियों की पढ़ाई को लेकर जागरूकता ,कर्ज और आढ़ती से दबा किसान, पत्नी को सरकारी नौकरी करने रोकना, जातिभेद, प्रेम में जातिभेद, जमीन के बंटवारे को लेकर होने वाले लड़ाई-झगड़े, विजातीय शादी, ऑनर किलिंग आदि मुद्दे इसमें उठाए गए हैं। ग्रुप डी वेबसीरिज दोहरे अंकों वाली बेरोजगारी वाले हरियाणवी समाज के बेरोजगार युवा के सरकारी नौकरी के सपने को लेकर बनाई गई है। सुमित धनकड़ इसके लीड रोल में हैं जिन्होंने सरकारे नौकरी की तैयारी करने वाले युवा के संघर्ष, पीड़ा और सपने को बखूबी जिया है। कैंप बनवास को पहली हरियाणवी यू ट्यूब वेबसीरिज माना जाता है जिसमें एक ऐसी लड़की की कहानी है जो जीवन में भावनात्मक उथल पुथल से गुजरती है। हिम्मत के साथ दर्शकों को आश्वस्त

करती है कि जीवन में संघर्ष से नहीं घबराना चाहिए।(टाइम्स ऑफ इंडिया 18/08/2019)17

विवादास्पद सामाजिक मुद्दों पर हरियाणवी वेबसीरिज बीच का रास्ता अपनाती हुई दिखती हैं। एक ओर स्त्री अधिकार की राह में रोड अटकाने वाली रूढ़िवादी मानसिकता और दूसरे ओर आधुनिक प्रगतिशील तार्किक सोच रखने वाले पात्र हैं। अधिकतर वेबसीरिज की पृष्ठभूमि ग्रामीण परिवेश है। ग्रामीण जीवन के दुख दर्द, विवशता, कृषि और कृषक जीवन की पीड़ा, कृषि भूमि की बिक्री, रोजगार और बेकारी की समस्या, पंचायती दाँवपेंच, पंचायत चुनाव में बाहुबल, धनबल, शराब, पारिवारिक दुश्मनी, हत्या, कोर्ट कचहरी, पुलिस और उसका भ्रष्टाचार इन वेब सीरीज में हैं जो हरियाणवी समाज और संस्कृति की विकृतियों को प्रस्तुत करते हैं तथा ही उस छवि को परिवर्तित करने का प्रयास और संघर्ष इन वेबसीरीज में है।

निष्कर्ष : स्टेज एप की हरियाणवी वेबसीरिज सामाजिक तानेबाने, रीतिरिवाज, परंपरा, मूल्य और सोच के स्तर पर एक नई जमीन तैयार करती है। रूढ़िवादी और पारंपरिक समाज में परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध को ये वेबसीरिज अपनी आधुनिक सोच और सामंजस्य वादी दृष्टिकोण से सामना करती है। कोरोना काल में अनेक उद्योगों के सामने नए अवसर उभरे।मनोरंजन के माध्यम के रूप में ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म का विस्तार भी इसी कड़ी में से एक उद्योग है। कोविड काल, लॉकडाउन और प्रतिबंधित जीवन शैली के समय में हिन्दी ,अंग्रेजी के साथ-साथ स्थानीय भाषाओं में बनी वेब सीरीज अत्यंत लोकप्रिय हुईं। हरियाणवी बोली में स्टेज पर आरंभ हुई अनेक वेब सीरीज अपने समय के ज्वलंत सामाजिक -सांस्कृतिक मुद्दों को नए सिरे से बहस के केंद्र में लाती है। हरियाणा के पारंपरिक समाज और संस्कृति वाले परिवेश में अन्धविश्वास, रूढ़ियों, मान्यताओं और परंपरा को वेब सीरीज न केवल नए संदर्भ में देखती हैं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ को भी सिरे से परिभाषित करती हैं। विवादास्पद सामाजिक मुद्दों पर हरियाणवी वेबसीरिज बीच का रास्ता अपनाती हुई दिखती हैं। एक ओर स्त्री अधिकार की राह में रोड अटकाने वाली रूढ़िवादी मानसिकता और दूसरे ओर आधुनिक प्रगतिशील तार्किक सोच रखने वाले पात्र हैं। अधिकतर वेबसीरिज की पृष्ठभूमि ग्रामीण परिवेश है। आधुनिकीकरण के परिणाम स्वरूप संस्कृति में आए बदलाव भी इन वेबसीरीज में हैं तो बदलते सामाजिक परिवेश के चित्र भी हैं। नशा और शराब जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध उठाए जाने वाले मुद्दे हों या बोली, खानपान, रीति -रिवाज आदि ये सब इन वेब सीरीज में देख सकते हैं। युवा वर्ग इन वेब सीरीज के माध्यम से हरियाणवी पारंपरिक समाज -संस्कृति के विविध पक्षों से रूबरू हो रहा है।

कैंप बनवास, मेरे यार की शादी है, सेफहाउस ,ग्रुप डी, किराएदार, प्रेमनगर, गौरव की स्वीटी आदि वेब सीरीज हरियाणवी युवाओं के रोजगार, परिवार में समाज में उसकी स्थिति, प्रेम, महत्वाकांक्षा, संघर्ष, जुझारुपन, जीवट और जीवन के विभिन्न रूपों की प्रस्तुति करती हैं जिसमें युवा परंपरा और आधुनिकता के बीच सामंजस्य स्थापित करता दिखाई देता है। अधिकतर वेब सीरीज हरियाणा जैसे पारंपरिक समाज में संतुलनवादी दृष्टिकोण अपनाती सी दिखती है। उन में क्रांति की बजाय यथास्थिति पर तार्किक तरीके से परिवर्तन के प्रयास किए गए हैं। ग्रामीण जीवन के दुख दर्द, विवशता, कृषि और कृषक जीवन की पीड़ा, कृषि भूमि की बिक्री, रोजगार और बेकारी की समस्या, पंचायती दाँवपेंच, पंचायत चुनाव में बाहुबल, धनबल, शराब, पारिवारिक दुश्मनी, हत्या, कोर्ट कचहरी, पुलिस और उसका भ्रष्टाचार इन वेब सीरीज में हैं जो हरियाणवी समाज और संस्कृति की विकृतियों को प्रस्तुत करते हैं उस छवि को परिवर्तित करने का प्रयास और संघर्ष इन वेबसीरीज में है।

संदर्भ सूची :

1. राय, बाबू गुलाब राय, 2018) भरतिय संस्कृति की रूप रेखा, पृष्ट 11, ज्ञान गंगा प्रकाशन, दिल्ली.
2. अग्रवाल, वासुदेव शरण अग्रवाल।, (2020). कला और संस्कृति, पृष्ट 13, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.
3. प्रसाद,राजेंद्र, (2012). साहित्य, शिक्षा और संस्कृति, पृष्ट 189, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली.
4. मिश्रा. गिरिश्वर, (2020). सं मिश्र, डॉ दयानिधि, संस्कृति की सत्ता, पृष्ट 7-8, प्रतिभा प्रकाशन, दिल्ली.
5. जनसता रिपोर्ट, 01/12/2017)
6. विश्वास चौहान, हरियाणवी वेबसीरिज़ निर्देशक दूरभाष साक्षात्कार 07/03/2022)
7. सत्य खबर न्यूज़ चैनल, साक्षात्कार), 1/05/2021.
8. सत्य खबर टीवी चैनल ,साक्षात्कार) 01/05/2021
9. द इकोनोमिक्स टाइम्स रिपोर्ट, 11/03/2021.
10. साक्षात्कार विश्वास चौहान, 07/03/2022)
11. विश्वास चौहान हरियाणवी वेबसीरिज निर्देशक, दूरभाष साक्षात्कार, 07/03/2022.
12. हरिभूमि, रिपोर्ट, 19/08,2021
13. भार्गव, गोपाल. (2011). हरियाणा की कला एवं संस्कृति, कल्पज पब्लिकेशन, दिल्ली.

14. 19/08/2021,www.jeewanadhar.com.

15. हरिभूमि रिपोर्ट, 19/08/2021)

16. साक्षात्कार विश्वास चौहान, 07/03/2022)

17. विश्वास चौहान हरियाणवी वेबसीरिज निर्देशक, दूरभाष साक्षात्कार, 07/03/2022.

18. संवाद, चौधर वेबसीरीज

19. टाइम्स ऑफ इंडिया रिपोर्ट, 18/08/2019